

संसाधन एवं विकास

- लौह अयस्क किस प्रकार का संसाधन है?
(क) नवीकरण योग्य (ख) प्रवाह
(ग) जैव (घ) अनवीकरण योग्य (घ)
- ज्वारीय ऊर्जा निम्नलिखित में से किस प्रकार का संसाधन नहीं है?
(क) पुनः पूर्ति योग्य (ख) अजैव
(ग) मानवकृत (घ) अचक्रिय (घ)
- पंजाब में भूमि निम्नीकरण का निम्नलिखित में से मुख्य कारण क्या है?
(क) गहन खेती (ख) अधिक सिंचाई
(ग) वनोन्मूलन (घ) अति पशुचारण (ख)
- निम्नलिखित में से किस प्रांत में सीढ़ीदार (सोपानी) खेती की जाती है?
(क) पंजाब (ख) उत्तर प्रदेश के मैदान
(ग) हरियाणा (घ) उत्तराखण्ड (घ)
- इनमें से किस राज्य में काली मृदा मुख्य रूप से पाई जाती है?
(क) जम्मू और कश्मीर (ख) राजस्थान
(ग) महाराष्ट्र (घ) झारखण्ड (ग)
- उत्पत्ति के आधार पर संसाधनों को निम्नलिखित भागों में बाँटा जा सकता है—
(क) जैव और अजैव (ख) नवीकरण योग्य व अनवीकरण योग्य
(ग) प्राकृतिक और मानवीय (घ) संभावी व विकसित (क)
- निम्न में से कौन अजैव संसाधन है?
(क) चट्टानें (ख) पशु
(ग) पौधे (घ) मछलियाँ (क)
- नवीकरण योग्य संसाधन है—
(क) पवन ऊर्जा (ख) वन
(ग) जल (घ) ये सभी। (घ)
- अचक्रिय संसाधन है—

- (क) जीवाश्म ईंधन (ख) पवन ऊर्जा
(ग) पशु (घ) मनुष्य (क)
10. रियो डी जेनेरो पृथ्वी सम्मेलन का आयोजन कब हुआ था—
(क) 1990 में (ख) 1991 में
(ग) 1992 में (घ) 1995 में (ग)
11. भूमि एक संसाधन है?
(क) प्राकृतिक (ख) मानव निर्मित
(ग) सौर ऊर्जा से निर्मित (घ) इनमें से कोई नहीं (क)
12. जलोढ़ मृदा निम्न में से किस फसल की खेती के लिए उपयुक्त है?
(क) गन्ना (ख) चावल
(ग) गेहूँ (घ) ये सभी (घ)
13. लाल-पीली मृदा कहाँ पाई जाती है?
(क) दक्कन के पठारी क्षेत्र में (ख) मालवा प्रदेश में
(ग) ब्रह्मपुत्र घाटी में (घ) थार रेगिस्तान में (क)
14. निम्न में से किस राज्य की लाल लेटराइट मृदाएँ काजू की फसल के लिए अधिक उपयुक्त हैं?
(क) तमिलनाडु (ख) आंध्र प्रदेश
(ग) केरल (घ) ये सभी (घ)
15. चादर अपरदन के लिए निम्न में से कौन-सा कारक उत्तरदायी है—
(क) जल (ख) वायु
(ग) भूमिगत जल (घ) हिमनदी। (क)

रिक्त स्थान—

- पर्यावरण में पाए जाने वाले ऐसे पदार्थ या तत्व जिनसे मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति हो कहलाते हैं।
 - जून, 1992 में ब्राजील के नामक शहर में प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय पृथ्वी-सम्मेलन का आयोजन हुआ।
 - भारत का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल है।
 - शुमेसर द्वारा लिखित पुस्तक है।
 - फसलों के बीच वृक्षों की कतारें लगाना कहलाता है।
- उत्तर— 1. संसाधन, 2. रियो डी जेनेरो, 3. 32.8 लाख वर्ग किमी,
4. स्माल इन ब्यूटीफुल, 5. रक्षक मेखला।

प्रश्न—1 संसाधनों को तत्वों या पदार्थों के निर्माण में सहायक कारकों के आधार पर कितने भागों में बाँटा जा सकता है?

उत्तर— (1) प्राकृतिक संसाधन (2) मानवीय संसाधन।

प्रश्न—2 अनवीकरणीय संसाधन के कोई चार उदाहरण लिखिए।

उत्तर— (1) कोयला (2) खनिज—तेल (3) यूरेनियम (4) प्राकृतिक गैस।

प्रश्न—3 सतत् पोषणीय विकास का क्या अर्थ है?

उत्तर— सतत् पोषणीय विकास का अर्थ है कि विकास पर्यावरण को हानि न पहुँचाए और वर्तमान विकास की प्रक्रिया भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं की अवहेलना न करे।

प्रश्न—4 काली मृदा की दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर— (1) काली मृदा बहुत महीन कणों अर्थात् मृत्तिका से बनी होती है। (2) गर्म और शुष्क मौसम में इन मृदाओं में गहरी दरारें पड़ जाती हैं। जिससे इनमें अच्छी तरह वायु मिश्रित हो जाती है।

प्रश्न—5 लेटराइट मृदा भारत के किन-किन क्षेत्रों में पायी जाती है?

उत्तर— यह मृद कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, आन्ध्र प्रदेश, ओडिशा तथापश्चिम बंगाल क्षेत्रों में पाई जाती है।

प्रश्न—6 काजू की फसल उगाने के लिए सबसे अधिक उपयुक्त मृदा कौन-सी है।

उत्तर— लाल लेटराइट मृदा।

प्रश्न—7 भूस्खलन के लिए उत्तरदायी प्राकृतिक एवं मानवजनित कारक कौन-से हैं?

उत्तर— (1) प्राकृतिक कारक—पवन (2) मानवजनित कारक—वनोन्मूलन।

लघुत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न—1 संसाधन से क्या अभिप्राय है?

उत्तर— हमारे पर्यावरण में उपलब्ध वे समस्त वस्तुएँ जो हमारी आवश्यकताओं को पूरा करने में प्रयोग की जाती हैं और जिनको बनाने के लिए तकनीकी ज्ञान उपलब्ध है, जो आर्थिक रूप से संभाव्य एवं सांस्कृतिक रूप से स्वीकार्य हैं, संसाधन कहलाती हैं। संसाधन का अर्थ केवल प्राकृतिक तत्व ही नहीं है अपितु मानवीय या सांस्कृतिक तत्व भी महत्वपूर्ण संसाधन होते हैं। इस प्रकार कोई भी वस्तु जो मानव के लिए उपयोगी हो अथवा उपयोगिता में सहायक हो, संसाधन कहलाती है। जैसे— खनिज तेल, कोयला, जल, खनिज, प्राकृतिक वनस्पति, जीव—जन्तु आदि।

संसाधनों के वर्गीकरण के विभिन्न आधार कौन-कौन से हैं?

उत्तर— संसाधनों के वर्गीकरण के विभिन्न आधार—

- (1) उत्पत्ति के आधार पर— जैविक व अजैविक।
- (2) समाप्यता के आधार पर— नवीकरण योग्य और अनवीकरण योग्य
- (3) स्वामित्व के आधार पर— व्यक्तिगत, सामुदायिक, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय।
- (4) विकास की अवस्था के आधार पर— संभावी, विकसित, भण्डार एवं संचित कोष।

प्रश्न—3 नवीकरण योग्य एवं अनवीकरण योग्य संसाधनों में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर— नवीकरण योग्य एवं अनवीकरण योग्य संसाधनों में निम्नलिखित अन्तर है—

नवीकरण योग्य (नव्यकरणीय)	अनवीकरण योग्य (अनव्यकरणीय)
1. ये वे संसाधन हैं जिनका पुनः उपयोग सम्भव है।	1. ये वे संसाधन हैं जो एक बार उपयोग करने के बाद नष्ट हो जाते हैं। पुनः उपयोग सम्भव नहीं है।
2. ये पर्यावरण में प्रदूषण नहीं फैलाते हैं।	2. ये पर्यावरण में प्रदूषण फैलाते हैं।
3. पवन, जल, मृदा, वन, सौर-ऊर्जा आदि नवीकरण योग्य संसाधन हैं।	3. कोयला, खनिज—तेल, प्राकृतिक गैस आदि अनवीकरण योग्य संसाधन हैं।

प्रश्न—4 अन्तर्राष्ट्रीय संसाधनों का अभिप्राय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर— किसी देश की तटरेखा से 200 समुद्री मील की दूरी से परे खुले महासागरीय संसाधन अन्तर्राष्ट्रीय संसाधन होते हैं। इन पर किसी देश का अधिकार नहीं होता है। इन्हें कुछ अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएँ नियन्त्रित करती हैं। इन संसाधनों का अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं की सहमति के बिना उपयोग नहीं किया जा सकता है।

प्रश्न—5 मरुस्थलीय मृदा की कोई दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर— मरुस्थलीय मृदा की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

- (1) इन मृदाओं का रंग लाल व भूरा होता है।

- (2) ये मृदाएँ आमतौर पर रेतीली व लवणीय होती हैं।
- (3) शुष्क जलवायु एवं वनस्पति की कमी से इस मृदा में जलवाष्पन दर अधिक है।
- (4) इस मृदा में ह्रमस व नमी की मात्रा कम पायी जाती है।
- (5) यह मृदा अनुपजाऊ होती है लेकिन इसे उपयुक्त तरीके से सिंचित करके कृषि योग्य बनाया जा सकता है।

प्रश्न-6 स्वामित्व के आधार पर आप किस प्रकार संसाधनों का वर्गीकरण करेंगे?

उत्तर- स्वामित्व के आधार पर संसाधनों को निम्नलिखित चार प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है-

- (1) व्यक्तिगत संसाधन- वे संसाधन जिन पर व्यक्तिगत स्वामित्व होता है, व्यक्तिगत संसाधन कहलाते हैं जैसे- बाग, चारागाह, कुआँ, तालाब, भूखण्ड, घर, कार आदि।
- (2) सामुदायिक संसाधन- ऐसे संसाधन जो समुदाय के सभी सदस्यों के लिए समान रूप से उपलब्ध होते हैं, सामुदायिक संसाधन कहलाते हैं, जैसे- खेल का मैदान, चारागाह, श्मशान-भूमि, तालाब आदि।
- (3) राष्ट्रीय संसाधन- वे सभी संसाधन जिन पर केन्द्र अथवा राज्य सरकार का नियंत्रण होता है, राष्ट्रीय संसाधन कहलाते हैं। देश की राजनीतिक सीमाओं के अन्तर्गत समस्त भूमि एवं 12 समुद्री मील दूर तक महासागरीय क्षेत्र एवं इसमें पाये जाने वाले संसाधनों पर सम्बन्धित राष्ट्र का स्वामित्व होता है।
- (4) अन्तराष्ट्रीय संसाधन- इन संसाधनों को अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएँ नियन्त्रित करती हैं। तट रेखा से 200 समुद्री मील की दूरी (अपवर्जक आर्थिक क्षेत्र) से परे खुले महासागरीय संसाधनों पर किसी एक देश का अधिकार नहीं होता है। इन्हें बिना किसी अन्तर्राष्ट्रीय संस्था की सहमति के कोई देश उपयोग नहीं कर सकता।

प्रश्न-7 एजेण्डा-21 क्या है? इसके उद्देश्य बताइए।

उत्तर- जून, 1992 में 100 से अधिक देशों के राष्ट्राध्यक्षों का एक सम्मेलन ब्राजील के रियो-डी-जेनेरो शहर में अन्तर्राष्ट्रीय पृथ्वी सम्मेलन के नाम से हुआ। इस सम्मेलन का उद्देश्य विश्व स्तर पर उभरते पर्यावरणीय खतरों को रोकना एवं सामाजिक-आर्थिक समस्याओं का हल ढूँढना था। इसी सम्मेलन में एकत्रित नेताओं ने भू-मण्डलीय जलवायु परिवर्तन एवं जैविक-विविधता के एक घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर किये थे यही घोषणा पत्र एजेण्डा-21 के नाम से जाना जाता है। इस घोषणा पत्र का मुख्य उद्देश्य भू-मण्डलीय जलवायु परिवर्तन के खतरों को रोकना, जैविक-विविधता, पर्यावरण संरक्षण के लिए उपाय करना एवं भू-मण्डलीय सतत् पोषणीय विकास प्राप्त करना है।

प्रश्न-8 संसाधन नियोजन के विविध सोपानों का वर्णन कीजिए।

उत्तर- संसाधन नियोजन- संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग के लिए नियोजन एक सर्वमान्य रणनीति है। भारत जैसे विविधतापूर्ण संसाधनों वाले देश में यह बहुत महत्वपूर्ण है। हमारे देश में राष्ट्रीय, प्रादेशिक एवं स्थानीय स्तर पर संसाधन नियोजन की आवश्यकता है। अतः संसाधनों के उपयुक्त उपयोग के लिए अपनाई जाने वाली तकनीक संसाधन नियोजन कहलाती है।

संसाधन नियोजन की प्रक्रिया/सोपान- राष्ट्रीय, प्रादेशिक एवं स्थानीय स्तर पर संसाधन नियोजन करना आसान कार्य नहीं है, यह एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें निम्नलिखित सोपान हैं-

- (1) देश के विभिन्न प्रदेशों में संसाधनों को पहचानकर उनकी तालिका बनाना, इस कार्य में क्षेत्रीय सर्वेक्षण, मानचित्र बनाना तथा संसाधनों का गुणात्मक व मात्रात्मक अनुमान लगाना एवं उनका मापन करना है।
 - (2) संसाधन विकास योजनाएँ लागू करने के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी, कौशल एवं संस्थागत नियोजन ढाँचा तैयार करना।
 - (3) संसाधन विकास योजनाओं तथा राष्ट्रीय विकास योजनाओं में समन्वय स्थापित करना।
- हमारे देश में स्वतन्त्रता के पश्चात् से ही संसाधन नियोजन के उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्रथम पंचवर्षीय योजना से ही प्रयास किये गये हैं।

प्रश्न-9 भूमि-निम्नीकरण को नियन्त्रित करने के उपाय सुझाइए।

उत्तर- भूमि एक महत्वपूर्ण संसाधन है। इस संसाधन का उपयोग हमारे पूर्वज प्राचीनकाल से करते आये हैं तथा भावी पीढ़ी भी इसी भूमि का उपयोग करेगी, हम अपनी मूल आवश्यकताओं का 95 प्रतिशत से अधिक भाग भूमि से प्राप्त करते हैं। मानवीय क्रियाकलापों से न केवल भूमि का निम्नीकरण हो रहा है वरन् भूमि को हानि पहुँचाने वाली प्राकृतिक शक्तियों को भी बल मिला है। आज भूमि निम्नीकरण की समस्या का हल किया जाना अति आवश्यक है। भूमि-निम्नीकरण की समस्या को हल करने के प्रमुख उपाय निम्नलिखित हैं-

- (1) वृक्षारोपण- वनस्पतियाँ भूमि को सुरक्षात्मक आवरण प्रदान करती हैं। वानस्पतिक आवरण के कारण पानी सीधा जमीन पर नहीं गिर पाता है। फलतः यह मिट्टी की उर्वरता को बनाये रखने में मदद करती है। वनारोपण भूमि निम्नीकरण की समस्या सुलझाने में बहुत कारगर सिद्ध हो सकती है।
- (2) पेड़ों की रक्षक-मेखला- पेड़ों की रक्षक-मेखला का निर्माण भी भूमि निम्नीकरण को कम करने में सहायक होता है।
- (3) रेतीले टीलों का स्थिरीकरण- मरुस्थलीय क्षेत्रों में बालू के टीलों का स्थिरीकरण भी बहुत जरूरी है। यह कार्य काँटेदार पौधों को लगातार किया जा सकता है।
- (4) औद्योगिक स्राव व कूड़े-करकट की ठीक निकासी- उद्योगों से निकलने वाला गंदा पानी एवं अन्य वर्जनीय पदार्थ भूमि निम्नीकरण के मुख्य कारण हैं। इसलिए औद्योगिक कचरे व जल को संशोधित करने के पश्चात् ही विसर्जित करके जल और भूमि प्रदूषण कम किया जा सकता है।

प्रश्न-10 जलोढ़ मृदा का निर्माण कैसे होता है? जलोढ़ मृदा की विशेषताओं को लिखिए।

उत्तर- भारत में अधिकांश भू-भाग पर जलोढ़ मृदा विस्तृत रूप में फैली हुई है। यह हिमालय की तीन महत्वपूर्ण नदी तन्त्रों सिंधु, गंगा, ब्रह्मपुत्र द्वारा लाए गए निक्षेपों से बनी है। पूर्वी तट के नदी डेल्टा भी जलोढ़ मृदा से बने हैं। जलोढ़ मृदा की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

- (1) जलोढ़ मृदा सबसे अधिक उपजाऊ और अधिक विस्तार वाली है। यह मृदा विस्तृत रूप से सम्पूर्ण उत्तरी भारत के मैदान में फैली हुई है।
- (2) जलोढ़ मृदा में रेत, सिल्ट एवं मृत्तिका के विभिन्न अनुपात पाये जाते हैं।
- (3) अधिकतर जलोढ़ मृदाएँ पोटाश, फास्फोरस व चूनायुक्त होती हैं।
- (4) जलोढ़ बहाकर लाई गई मृदा है। यह मृदा नदियों द्वारा बहाकर लाये गये निक्षेपों से बनी है।
- (5) कणों के आकार के अतिरिक्त जलोढ़ मृदा की पहचान उसकी आयु से भी होती है। आयु के आधार पर जलोढ़ मृदाएँ दो प्रकार की होती हैं। पुरानी जलोढ़ व नवीन जलोढ़। पुरानी जलोढ़ को 'बांगर' एवं नवीन जलोढ़ को 'खादर' कहते हैं। बांगर मृदा में कंकर ग्रन्थियों की मात्रा अधिक होती है। खादर मृदा में बांगर मृदा की तुलना में अधिक बारीक कण पाये जाते हैं।
- (6) जलोढ़ मृदा में पेड़-पौधों का सड़ा-गला अंश (ह्रमस) बहुत अधिक मात्रा में मिलता है।
- (7) सूखे क्षेत्रों की जलोढ़ मृदाएँ अधिक क्षारीय होती हैं। इन मृदाओं का सही उपचार एवं सिंचाई करके इनकी पैदावार में वृद्धि की जा सकती है।